76

जनवरी-जून, 2019

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. पी.के. राय
- प्रो. ए.एन. शर्मा
- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी
- प्रो. अशोक अहिरवार
- प्रो. दिवाकर राजपूत
- प्रो. डी.के. नेमा
- प्रो. नागेश दुबे
- डॉ. अनुपमा कौशिक
- डॉ. प्रकाश जोशी

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अंक-76, जनवरी-जून 2019

ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :

मध्य भारती

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर - 470003 (म.प्र.)

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहेर

मुद्रण :

अमन प्रकाशन

कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

सदस्यता शुल्क			
	प्रति अंक	आजीवन	
व्यक्तिगत	रु. 150/-	रु. 2000/-	
संस्थागत	रु. 200/-	रु. 4000/-	

अनुक्रमणिका

वैदिक ऋषियों द्वारा काल की इकाइयों की स्थापना 07
रामप्रसाद

राष्ट्रवाद की अवधारणा का वि-औपनिवेशीकरण 19
विश्वनाथ मिश्र

भारतीय प्रगतिशील वैचारिकता, भाषा, राष्ट्रीयता और इतिहास दृष्टि : राहुल सांकृत्यायन का संघर्ष 39
हितेन्द्र पटेल

प्रकृति व समाज का द्वैत और समाज विज्ञानों की मानव-केंद्रित वैचारिकी 57
ईश्वर सिंह

अभिनिवेश (मृत्यु का भय) : चिन्ता से प्रामाणिकता तक 69
पंकज बासोतिया

भारतीय संस्कृति में सैंधव सभ्यता का नैरन्तर्य 75
सुरेन्द्र कुमार यादव

वेदों में शल्य चिकित्सा 88
संजय कुमार

स्वतंत्रता आंदोलन को आदिवासी प्रतिसाद 101
अरूण वाघेला

ग़ज़ल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 112
जुगुल किशोर चौधरी

प्राचीन समाज का दर्पण : आमखो के शैलचित्र 120
सुल्तान सलाहुद्दीन

भारतीय संस्कृति में सैंधव सभ्यता का नैरन्तर्य

सुरेन्द्र कुमार यादव

किसी भी संस्कृति के समृद्धि का मूल उत्स वहाँ के भौगोलिक स्थिति, व्यापार-वाणिज्य एवं शिल्प उद्योग पर निर्भर करता है। सैंधव संस्कृति अपने उत्कृष्ट कोटि के व्यापार-वाणिज्य, शिल्प-उद्योग, धार्मिक स्थिति एवं तकनीकी ज्ञान आदि से जानी जाती है। इस सभ्यता से संबंधित विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त व्यवस्थित नगर योजना, दुर्गीकृत विन्यास, विस्तृत व व्यवस्थित रुप से फैली हुयी सड़कमार्ग, जल निकासी की व्यवस्था एवं अन्नागार आदि अवयव इसे एक वृहद नगरीय सभ्यता के रुप में परिलक्षित करते हैं।[1] सैंधव संस्कृति के विशिष्ट प्रकार के तत्वों की उन्नत प्रगति की नैरन्तर्य हमें भारतीय संस्कृति में दिखलायी देती है। सैंधव संस्कृति के विभिन्न पुरास्थलों यथा हडप्पा, मोहनजोदड़ों, कोटडीजी, बनावली, राखीगढ़ी, कालीबंगा, लोथल, सुरकोटड़ा एवं धौलाबीरा आदि पुरास्थलों से प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर जो तकनीकी, प्रौद्योगिकी, कृषि, शिल्प, उद्योग- धन्धें एवं धार्मिक परम्पराओं आदि का ज्ञान प्राप्त होता है, उसी प्रकार के साक्ष्य हमें भारतीय संस्कृति से संबंधित विभिन्न पुरास्थलों यथा हस्तिनापुर, अतरंजीखेड़ा, श्रावस्ती, कौशाम्बी, राजगृह, वैशाली एवं चन्द्रकेतुगढ़ आदि से प्राप्त हुये हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में यह प्रश्न उठाया गया है कि क्या भारतीय संस्कृति के विविध तत्वों की मूल जड़ें सैंधव संस्कृति में निहित है? इसके अतिरिक्त वर्तमान अन्वेषणों के फलस्वरुप प्रकाश में आये नवीन साक्ष्यों के आधार पर सैन्धव संस्कृति के संदर्भ में पुरानी मान्यताओं के निष्पादन पर भी विचार किया गया है। सैंन्धव संस्कृति में कुछ विशिष्ट तत्वों का नैरन्तर्य भारतीय संस्कृति में दिखलायी दिखता है। इनमें मुख्य रुप से निम्नलिखित तत्वों को समाहित किया जा सकता है।

नगर नियोजन की नैरन्तर्यता - सैंधव संस्कृति के विभिन्न पुरास्थलों से आवासीय संरचना के वृहद् प्रमाण मिले हैं। इनमें हड़प्पा, मोहनजोदडों, कालीबंगा, बनावली, राखीगढ़ी एवं धौलाबीरा आदि पुरास्थल महत्वपूर्ण हैं। इस संस्कृति के पुरास्थल वृहद्, मध्यम एवं छोटे आकार के मिलते हैं, जो संभवतः नगर, कस्बे एवं गाँवों के रुप में रहे होंगे। इस संस्कृति का सम्पूर्ण विस्तार लगभग आठ लाख वर्ग मील में मिलता है। सैंधव सभ्यता में नगर एवं कस्बे को एक निश्चित योजना के अनुरुप बसाया जाता था। सामान्यतया पूर्व दिशा में नगर एवं पश्चिम दिशा में अपेक्षाकृत ऊँचे किन्तु छोटे टीले पर दुर्ग अथवा किले के बसाव का साक्ष्य मिलता है। दुर्ग रक्षा-प्राचीर से युक्त होते थे। किन्तु कहीं -कहीं नगर क्षेत्र को भी दुर्ग क्षेत्र के साथ ही रक्षा प्राचीर से घेरा जाता था, जैसे लोथल एवं सुरकोटड़ा। वे नगरों का नियोजन चेसबोर्ड (शतरंज के आधार पर) संरचना के अनुरुप करते थे तथा मकानों के निर्माण में प्रयुक्त ईटों को टोडिया-पट्टी विधि से जोड़ते थे। आधुनिक काल में इस विधि को इंगलिश बॉण्ड मेथेड (English Bondage Method) कहते हैं। सैंधव सभ्यता के नगरों में प्रत्येक आवासीय

मध्य भारती-76, जनवरी-जून, 2019, ISSN 0974-0066, *pp. 75-87*
यूजीसी केयर लिस्ट, ग्रुप-सी (मल्टीडिसिप्लिनरी), क्र.सं.-15

प्रासाद के मध्य में एक आंगन, इसके चारों ओर चार-पाँच कमरे, रसोईघर, स्नानघर एवं अधिकांश घरों में कुआं होता था। स्नानघरों, बरसाती पानी एवं घरों के मलमूत्र के निकासी के लिये मल-कूप (Manholes) बने होते थे। इन्हीं के सिद्धान्तों के आदर्श पर कालान्तर में ऐतिहासिक काल में "चतुःशाल-गृह" निर्मित होने लगे, जिनका वर्णन प्राचीन साहित्य में बहुधा प्राप्य है।[5] आज भी परम्परागत पद्धति से बने घरों में सैंधव संस्कृति की भांति बीच में आंगन और उसके चारों ओर कमरे मिलते हैं। मोहनजोदड़ो के दुर्ग क्षेत्र से प्राप्त स्तम्भयुक्त भवनों के अवशेष मौर्यकालीन पाटलिपुत्र के स्तम्भों की याद दिलाते हैं। कुछ विद्वान कौशाम्बी के रक्षा प्राचीर की शैली को सैंधव की रक्षा प्राचीर से प्रभावित मानते हैं, किन्तु यह अत्यन्त संदेहास्पद है। धौलावीरा नामक पुरास्थल का नगर नियोजन की संरचना तीन इकाईयों में विभक्त थी- दुर्ग क्षेत्र, मध्य क्षेत्र एवं नगर क्षेत्र। इस पुरास्थल के उत्खननकर्ता प्रो. आर. एस. विष्ट ने ऋग्वेद में वर्णित परमेष्ठी(परमा), मध्येष्ठी(मध्यमा) एवं अवमेष्ठी (अवमा) से इनकी साम्यता स्थापित की है।[6] वैदिक एवं परवर्ती साहित्य में आवासीय संरचना से संबंधित अनेक उद्धरण प्राप्त होते हैं, जिसकी साम्यता सैंधव संस्कृति के नगर विन्यास के विविध स्वरुपों से कर सकते हैं। ऋग्वेद में विशाल भवनों को हार्य कहा जाता था, जिनमें अनेक प्रकोष्ठ भी होते थे।[7] इन घरों को सुरक्षा हेतु बन्द भी किया जा सकता था। छतों से पटे आवासों को छर्दिस कहा गया है।[8] द्वारयुक्त घरों के लिये 'दुरोण' तथा 'दुर्यसु' शब्द प्रयुक्त किया गया है।[9] ऋग्वेद में दीवारों वाले पुरों (दुर्गों) का उल्लेख है,[10] जो प्रारम्भ में मिट्टी के तथा कालान्तर में पत्थर के बनाये जाने लगे। इसी ग्रन्थ में वर्णित 'त्रिधातु' शब्द का अर्थ सायणाचार्य ने 'त्रिभूमि' से किया है।[11] इससे प्रतीत होता है कि वैदिक कालीन घर तीन आँगन अथवा तीन मंजिले भी होते थे। सैंधव संस्कृति में दुर्ग एवं नगर क्षेत्र की योजना संभवतः दो विभिन्न वर्गों के रहनें के स्थल थे। परवर्ती ऐतिहासिक काल में विभिन्न वर्गों के लिये किसी आवास स्थल में अलग- अलग क्षेत्र निर्धारित किये गये है। उपरोक्त साक्ष्य से यह अनुमान लगा सकते हैं कि सैंधव संस्कृति के आवासों की नैरन्तर्यता बाद के कालों के आवासों से काफी मिलती जुलती है।

विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान की नैरन्तर्यता - सैंधव सभ्यता के विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान की जानकारी वहाँ के नगर नियोजन एवं विविध प्रकार के भवन निर्माण के आधार पर कर सकते हैं। सैंधव के नगरों का अभिविन्यास शतरंज पट की तरह होता था, जिनमें मोहनजोदड़ो की उत्तर-दक्षिण हवाओं का लाभ उठाते हुए सड़के करीब-करीब पूर्व से पश्चिम की ओर जाती थी। ऐसे सावधानीपूर्ण विन्यास के पूर्व भूमि का समोच्च सर्वेक्षण (कंटूर-सर्वे) आवश्यक है। मोहनजोदड़ो, कालीबंगा तथा लोथल से कांस्य, मृण, हस्तिदन्त एवं सीप के बने हुये मापक मिले हैं (छायाचित्र 1)। इन मापक शलाकाओं में दो प्रणालियाँ फुट तथा हाथ हैं। सीप में 13.2 इंच माप की फुट प्रणाली है और कांस्य शलाका में करीब 20.7 इंच के माप की हाथ प्रणाली है। लोथल[9] एवं चाहुन्दड़ो[10] से साहुल के प्रमाण मिले हैं, जिनका उपयोग बड़े भवनों के निर्माण में उपयोगी था। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल एवं अल्लाहदीनो आदि पुरास्थलों से छोटे-बड़े आकार के बाट मिले हैं(छायाचित्र 2)। इनका पैमाना 13-64 ग्राम एकक मान का ठीक 16 गुना वजन का है। माप-जोख और हिसाब की भारतीय पद्धति में 16 की प्रधानता सुविदित है। यह प्रधानता सैंधव सभ्यता में ही सर्वप्रथम निर्धारित हुई थी। सैंधव सभ्यता के नगर नियोजन एवं वास्तु संरचना के आधार पर उनके गणित एवं ज्यामितिय ज्ञान की जानकारी प्राप्त होती है। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, धौलाबीरा एवं लोथल आदि के स्मारकों में रक्षाप्राचीर, अन्नागार, स्नानागार, सड़के तथा खण्ड़ों में बाँट कर बनाये गये आवासीय भवन गणित एवं ज्यामितिय ज्ञान को व्यक्त करते हैं। इस संस्कृति में नगर नियोजन को ध्यान में रखकर सड़कों का निर्माण हुआ है, जो बिना सर्वेक्षण के ज्ञान के संभव नहीं है। लोथल से प्राप्त ऐसे उपकरण जिसे सामान्यतया प्रकाल (Compas) माना जाता है, जो संभवतः भवन निर्माण में कोण बनाने व नापने के काम में आता होगा।[11] इसी तरह के अन्य उपकरण भी

विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुये हैं।[12] नालियों की योजना में समतलीकरण का ज्ञान, ईटों की बनावट में आयताकार, किनारों का नुकीलापन, समकोण में होना, कुओं के लिये अर्द्धगोल ईटों का बनाया जाना ज्यामितिय ज्ञान में समानान्तर एवं गोलाई के ज्ञान को पुष्ट करते हैं।[13] मृद्भाण्डों पर बनायी गयी विविध प्रकार की ज्यामितिय अलंकरण भी इस ज्ञान को पुष्ट करते हैं। सैंधव सभ्यता के सभी पुरास्थलों से ईंटों के माप का अनुपात 4:2:1 है।[14] ये सभी तकनीक कालान्तर में ऐतिहासिक कालों में दिखलायी देती है।

सैंधव सभ्यता के लोगों को धातु अयस्कों को पिघलाने एवं दो धातुओं के संयोग से मिश्रित धातु बनाने की तकनीक ज्ञात थी। मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांस्य धातु की नर्तकी प्रतिमा का निर्माण बंद साँचे में डाल कर बनायी गयी है, जो मधुच्छिष्ट तकनीकी (Lost Wax Method) से संबंधित है (छायाचित्र -3)। इस तकनीकी की निरन्तरता सातवीं शताब्दी ईस्वी सन् में बिहार प्रान्त के सुल्तानगंज पुरास्थल से प्राप्त बुद्ध प्रतिमा में दिखती है। बाद के कालों में भी इस तकनीकी की निरन्तरता लगातार बनी रही, जो दक्षिण भारत के चोल कला में दिखती है (छायाचित्र 4)।

चिकित्सा विज्ञान की नैरन्तर्यता - चिकित्सा के क्षेत्र में सैन्धव सभ्यता के लोग उन्नत अवस्था में थे। विश्व की सबसे प्राचीनतम सफल मानव मस्तिष्क सर्जरी का प्रमाण हड़प्पा संस्कृति के लोथल(गुजरात) एवं कालीबंगा(राजस्थान) पुरास्थलों से ज्ञात हुआ है।[15] कालीबंगा से प्राप्त एक नर कपाल का आपरेशन ड्रिल मशीन द्वारा छेद कर किया गया, जो पूर्णतया सफल रहा (छायाचित्र 5)। जब किसी व्यक्ति के कपाल के अंदरूनी भागों में हड्डी चटक जाती है, जो मस्तिष्क में बिखरी हड्डी के चूरे को मस्तिष्क से बाहर निकालने के लिये कपाल के एक छोटे हिस्से में शल्य क्रिया किया जाता है। इस प्रकार की शल्यक्रिया को (Trephination) कहा जाता है। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से शल्यक्रिया में प्रयुक्त होने सदृश उपकरण प्राप्त हुये हैं। इसके अतिरिक्त हड़प्पा संस्कृति से अनेक औषधि, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संबंधित जानकारियाँ प्राप्त हुयी है। इनमें विस्तृत स्वास्थ्य संबंधित उपाय, विशेष रुप से निर्मित कक्षों में स्नान की व्यवस्था, कटल फिश बोन, शिलाजित, प्रवाल, नीम की पत्ती, हिरण, गैंड़ा आदि जानवरों की अस्थियाँ आदि मिली है, जिनका प्रयोग औषधि के रुप में किया जाता रहा होगा। आयुर्वेद में उपर्युक्त औषधियों का उल्लेख मिलता है। ये तथ्य इंगित करते हैं कि भारतीय चिकित्साशास्त्र का मूल हड़प्पा संस्कृति तक प्रसरित था।[16]

कृषि एवं शिल्प उद्योग की नैरन्तर्यता - कालीबंगा के प्राक् हड़प्पीय चरण से जुते हुये खेत का प्रमाण मिला है। इस खेत के सीते दो दिशाओं में है, पूर्व -पश्चिम और उत्तर दक्षिण। पूर्व-पश्चिम में 30 सेमी. तथा उत्तर दक्षिण दिशा में 1.90 मीटर (छायाचित्र 6)।[17] ये एक साथ दो फसल बोने के साक्ष्य हैं और निश्चय ही सिंधु सभ्यता में भी प्रचलित रहे होंगे। इस तरह की कृषि का प्रचलन आज भी राजस्थान, हरियाणा और पूर्वी उत्तर प्रदेश आदि क्षेत्रों में प्रचलित है (छायाचित्र 7)। सैंधव सभ्यता के बनावली नामक पुरास्थल से मिट्टी के हल का खिलौना प्राप्त हुआ है (छायाचित्र 8)।[18] इससे हल के निर्माण तथा प्रयोग की पुष्टि होती है।[19] इसके अतिरिक्त सील-बट्टा (छायाचित्र 9), वृत्ताकार चकरी के दो पाट, कुदाल, दोधारी व एकधारी धातु की हंसिया तथा कपास, धान, गेहूँ, बाजरा, मटर एवं तिल आदि अन्न के साक्ष्य तथा कृषि सामान ढ़ोने के लिये गाड़ियों के अवशेष प्राप्त हुये हैं।[20] इस प्रकार के साक्ष्यों का प्रमाण भारतीय संस्कृति के विभिन्न पुरास्थलों से भी मिलते हैं।

सैंधव संस्कृति के पुरास्थलों से प्राप्त विविध प्रकार के पुरावशेषों से हम विभिन्न प्रकार के उद्योगों का अनुमान लगा सकते हैं। इनमें प्रमुख रुप से वस्त्र उद्योग, हस्तिदन्त उद्योग, मनका उद्योग, मृत्तिका उद्योग, आभूषण उद्योग, धातु उद्योग, काँच उद्योग एवं प्रस्तर उद्योग आदि प्रमुख हैं। मोहनजोदड़ो से मजीठ रंग से रंगा हुआ सूती कपड़ें का टुकड़ा प्राप्त हुआ है। यहीं से तिनफुलिया चिन्ह बनी चादर ओढ़े सन्यासी की धड़ मूर्ति

प्राप्त हुयी, जिससे वस्त्रों पर अलंकरण का अनुमान लगाया जा सकता है (छायाचित्र 10)। ऊनी कपड़ा भी तैयार किया जाता था। उत्खनन से कपड़े बुनने, सूत काटने के तकुऐ तथा उनको लपेटने की ललाई एवं बाबिन आदि प्राप्त हुये हैं। सैंधव संस्कृति में हस्तिदन्त से संबंधित पुरावशेषों में मोहनजोदड़ो से प्राप्त अलंकृत फलक, कंघी, बालों में लगाने की पिन एवं सुईयाँ, दर्पण के हत्थे, गोटियाँ एवं लेखनी के प्रमाण मिले हैं। लोथल में हस्तिदन्त का कार्य होता था।[21] हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न पुरास्थलों से बड़ी संख्या में मनके प्राप्त हुये हैं। लोथल एवं चहुन्दड़ों से मनका बनाने वाले शिल्पियों की उद्योगशालाएं प्राप्त हुई हैं। ये मनके सेलखड़ी, कार्नीलियन, जैस्पर, चाल्सीडोनी, क्रिस्टल, लाजवर्द, कांचली मिट्टी, शंख, हस्तिदन्त आदि के बने हुये थे। सैंधव संस्कृति में मृत्तिका उद्योग पूर्णरुप से विकसित रहा। इस संस्कृति के प्रत्येक पुरास्थलों से विविध आकार-प्रकार के मृद्भाण्डों के प्रमाण मिले हैं। इन पर अलंकरणों की एक लम्बी श्रृंखला मिलती है। साथ ही मृत्तिका उद्योग के अन्तर्गत मृण्मूर्तियां, मुखौटे, मुहरे एवं खिलौने आदि प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त सैंधव संस्कृति में आभूषण उद्योग, धातु उद्योग, काँच उद्योग एवं प्रस्तर उद्योग आदि उन्नत रुप में दिखलायी देता हैं (छायाचित्र 11)।

भारतीय संस्कृति के विभिन्न पुरास्थलों यथा हस्तिनापुर, अतरंजिखेड़ा, खैराडीह, कौशम्बी, राजघाट, अगियाबीर एवं वैशाली आदि से प्राप्त विविध प्रकार के पुरावशेषों में निहित विविध शिल्प उद्योगों का अप्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होता है। इनमें कुछ पुरावशेष अपनी प्रकृति, गढ़न, निर्माण, बनावट एवं उपयोगिता आदि के आधार पर सैंधव संस्कृति से संबद्ध शिल्प उद्योगों के समतुल्य हैं।

धर्म की नैरन्तर्यता - भारतीय संस्कृति के अनेक देवी देवताओं का मूल उत्स हमें सैंधव संस्कृति में देखने को मिलता है। इनमें मातृदेवी की उपासना, पशुपति शिव की कल्पना, लिंग एवं योनि पूजा, मूर्ति पूजा, वृक्षपूजा, जल की पवित्रता एवं नाग पूजा आदि महत्वपूर्ण है। सैंधव सभ्यता के अनेक पुरास्थलों से मृण की बनी अनेक नारी मूर्तियाँ प्राप्त हुयी हैं। ये प्रायः पंखकार शिरो-भूषा, कई लड़ियों वाले हार, चूड़ियां, मेखला तथा कर्णाभरण पहने हैं। पंखकार शिरोभूषण के दोनों ओर दीपक जैसी आकृति बनी हैं, जिनमें कालिख लगी मिली है। जो इस बात का द्योतक है कि इनमें धूप जलायी गई होगी। विद्वानों ने विशद् केश सज्जा से युक्त होने के कारण पूजा के निमित्त मातृदेवी की मूर्ति माना है। प्राचीन भारत में मातृदेवी की पूजा का प्रचलन प्रथम सहस्त्रब्दी ईसा पूर्व से ही मिलने लगता है। शिव की उपासना से संबंधित अंकन सैंधव सभ्यता की मुहरों एवं मूर्तियों में दिखलायी देता है। मार्शल महोदय ने मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर अंकित देवता को ऐतिहासिक काल के शिव का प्राक् रुप माना है। यह देवता योगासन मुद्रा में एक चौकी पर बैठे हैं। इसके अगल बगल चार पशुओं का अंकन है, जो संभवतः उसके पशुपति रुप में द्योतक है।[22] (छायाचित्र 12) हड़प्पा से प्राप्त नग्न पुरुष की पाषाण मूर्ति शिव के योगीश्वर रुप को इंगित करती है। हडप्पा, मोहनजोदड़ो तथा कालीबंगा आदि पुरास्थलों से पत्थर एवं मृण के बने लिंग एवं योनि की आकृतियां प्राप्त हुयी हैं। सप्तमातृकाओं का अंकन सैंधव मुद्राओं पर उत्कीर्ण है। इसके अतिरिक्त पशु एवं वृक्ष पूजा के साक्ष्य मिलते है। पीपल के वृक्ष का अंकन मुहरों एवं पात्रों पर बहुधा देखनें को मिलता है (छायाचित्र-13)। सैंधव संस्कृति में वृक्षोपासना के अनेक साक्ष्य मिलते हैं(छायाचित्र 14)। सैंधव सभ्यता में नाग पूजा का अंकन मोहनजोदड़ो से प्राप्त मृण की एक मुहर पर दिखता है। इसमें योगासीन मानवाकृति के दोनों ओर एक -एक पुरुष हाथ जोड़े है, उनके पीछे सर्प के फन के रुप में दिखलाया गया है(छायाचित्र-15)। प्राकृतिक शक्तियों की उपासना बाद में भारतीय धर्म के प्रधान अंग बन गये। सैंधव सभ्यता में कुछ मूर्तियों को नग्न दिखाया गया है। इनमें से कुछ देवता हो सकते है। हड़प्पा से प्राप्त नग्न मानव धड़ (छायाचित्र-16) के समान ही चमकदार ओप से प्रलेपित प्रस्तर से निर्मित मौर्यकालीन मानव धड़ लोहानीपुर

(पटना, बिहार) से प्राप्त हुये हैं, जिसकी पहचान इतिहासविदों ने तीर्थंकर मूर्ति से की है (छायाचित्र- 17)। जिसकी निरन्तरता ऐतिहासिक काल में भी दृष्टव्य है। सैंधव संस्कृति में अग्निवेदी, अन्त्येष्टि संस्कार एवं पशुबलि के साक्ष्य भी मिले हैं। कालीबंगा के नगर क्षेत्र के कमरों में अग्निवेदी के साक्ष्य मिले है, जिनमें पशु अस्थियों के अवशेष हैं। इसी तरह के अग्निवेदी साक्ष्य बनावली एवं लोथल नामक पुरास्थलों से भी मिले हैं।[27] इसके साथ ही मुहरों पर भी पशुबलि के अंकन का उल्लेख पुराविदों द्वारा किया गया है।[28] उत्तरप्रदेश के बागपत जिले में स्थित सनौली नामक पुरास्थल के उत्तरवर्ती हड़प्पा चरण से लकड़ी एवं तांबें से निर्मित शाही रथ, ताबूत, कंकाल के साथ मूट्ठेवाली लम्बी तलवार, कटार, कवच, सिरस्त्राण, मशाल, दर्पण एवं स्वर्ण आभूषण आदि के साक्ष्य मिले हैं[29] (छायाचित्र 18-19)। यह साक्ष्य पूर्ववर्ती कई मान्यताओं को नवीन दृष्टि से देखने को विवश करता है। भारतीय संस्कृति में रथ के प्रमाण प्रागैतिहासिक काल से ही मिलने शुरु हो जाते हैं,[30] जिसकी नैरन्तर्य आज तक बनी हुयी है।

लोक कला की नैरन्तर्यता - सैन्धव सभ्यता से प्राप्त विभिन्न प्रकार के मुहरों एवं पात्रों पर अंकित चित्रणों से हम लोक कला के कथानकों का अनुमान लगा सकते है। लोथल से प्राप्त एक पात्र पर प्यासे कौऐ का अंकन किया गया है, जो पात्र में जल कम होने के कारण उसमें कंकड डालकर अपनी प्यास बुझाता है(छायाचित्र 20)। दूसरा अंकन भी लोथल से ही प्राप्त हुआ है, जिसमें पात्र के ऊपर धूर्त लोमड़ी एवं बगुले का अंकन किया गया है(छायाचित्र 21)। ये दोनों ही लोक कथाएं भारतीय संस्कृति के जनमानस में प्रचलित हैं।

प्रतीकों की नैरन्तर्यता - सैन्धव सभ्यता के विभिन्न पुरास्थलों से मुहरों एवं पात्रों पर अनेक प्रकार के प्रतीकों का अंकन मिलता है। ये प्रतीक भारतीय संस्कृति में धार्मिक महत्व के रुप में दिखलायी देते हैं। इनमें स्वस्तिक, चक्र, पीपल की पत्ती, केला एवं ध्वज आदि का अंकन मिलता है। मोहनजोदड़ो से स्वस्तिक का प्रमाण प्राप्त हुआ है(छायाचित्र 22)। भारतीय परम्परा में स्वस्तिक का अंकन शुभ लक्षण एवं सूर्य के प्रतीक के रुप में मिलता है।

योग की नैरन्तर्यता - सैन्धव सभ्यता से प्राप्त विभिन्न मुहरों एवं मूर्तियों में योग की मुद्राओं का अंकन दिखता है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर में पुरुष का अंकन पद्मासन मुद्रा में है। योग की एक अन्य मुद्रा का अंकन एक मूर्ति में मिलता है, जिसकी अर्द्धनिमीलित नेत्र नासिका के अग्र पर केन्द्रित है। इसको साम्भवी मुद्रा से संबंधित किया जाता है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त अधोवस्त्र से युक्त भू-स्पर्श जैसी मुद्रा में चूना पत्थर से निर्मित मूर्ति मिली है, जो गुप्तकाल के भू-स्पर्श मुद्रा के बुद्ध मूर्ति के समान है। हड़प्पा से नमस्कार मुद्रा में मृण की बनी मूर्ति प्राप्त हुयी है(छायाचित्र 23)। भारतीय संस्कृति में इस प्रकार की योग मुद्रा से संबंधित प्रतिमाएं तीसरी शताब्दी ईस्वी से बहुतायत में मिलने लगती है।

समाजिक परम्परा की नैरन्तर्यता - सैंधव सभ्यता में अनेक सामाजिक परम्पराओं का अंकन वहाँ के विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त पुरावशेषों में दिखलायी देता है। नौसारों एवं मेहरगढ़ नामक पुरास्थल से मृण की बनी हुयी नारी मूर्ति के मांग में सिन्दूर का अंकन मिलता है[31] (छायाचित्र 24)। आज भी भारतीय नारी के मांग में सिन्दूर लगाना उसके विवाहिता एवं सधवा होने का परिचायक है। इसी तरह सैंधव सभ्यता से विभिन्न प्रकार के आभूषणों की निरन्तरता परवर्ती संस्कृतियों में दिखलायी देती है। मोहनजोदड़ों से शंकुनुमा स्वर्ण आभूषण एवं कांस्य नर्तकी के बायें हाथ में बाजूबंद का अंकन आज भी राजस्थान एवं गुजरात की महिलाओं में देखने को मिलता है। इस संस्कृति के विभिन्न पुरास्थलों से हस्तिदन्त के कंघी[32], हेयर पिन[33], अंजन शलाका[34], चूड़ियाँ, अंगूठियाँ, ताबीज एवं दर्पण आदि के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं। कुणाल, हड़प्पा एवं लोथल आदि पुरास्थलों से रजत व स्वर्ण के मनकों की माला प्राप्त हुयी है। भारत में इस प्रकार के आभूषणों का प्रचलन आज भी दिखलायी देता है।[35] सैंधव सभ्यता के आमोद-प्रमोद के साधनों का अनुमान वहाँ के पुरावशेषों से ज्ञात होता है। यहाँ के

विभिन्न आमोद-प्रमोद की सामग्रियों में झुनझुना, घनाकार पांसे, पक्षियों की आकृतिनुमा सीटी, चौसर, गोलियाँ, फिरंगी, मुखौटा, मिट्टी व शंख के लट्टू आदि का प्रमाण मिला है (छायाचित्र 25)। धौलाबीरा से स्टेडियम के साक्ष्य मिले है, जिसका प्रयोग निश्चित रुप से आमोद-प्रमोद, धार्मिक उत्सवों आदि आयोजनों के लिये किया जाता था।[32] भारतीय संस्कृति में इस प्रकार के साक्ष्यों का उल्लेख मिलता है।

निष्कर्ष -

उपरोक्त साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में सैंधव सभ्यता की नैरन्तर्य के साक्ष्य प्रौद्योगिकी विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, कृषि विज्ञान, मृतिका निर्माण, गणित, स्वास्थ्य विज्ञान, योग विज्ञान, धार्मिक मान्यताएं एवं सामाजिक परम्पराओं आदि में परिलक्षित होते हैं। सैंधव सभ्यता के ये विशिष्ट तत्व भारत में इतने गहरे तक समाये हुये हैं कि इसकी प्रतिध्वनि सदियों तक विभिन्न संस्कृतियों में सुनाई देती रही। कालावधि के परिणाम स्वरुप सैंधव संस्कृति के विविध आयाम, मान्यताएं एवं मूल स्वरुप भारतीय संस्कृति में परिवर्तित होकर नवीन रुप में सामने आयी। दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह परिलक्षित होता है कि सैंधव सभ्यता पूर्णतः विलुप्त नहीं हुयी अपितु ह्रासोन्मुख स्थिति में यह बाद की संस्कृतियों में स्थानान्तरित हो गयी। तीसरा तथ्य यह संभावित है कि सैंधव संस्कृति ने परवर्ती भारतीय संस्कृतियों को प्रभावित किया। इस तथ्य की पुष्टि सनौली पुरास्थल से प्राप्त ताम्रनिधि समरुप के पुरावशेषों का हड़प्पा कालीन शवाधान प्रथा में उपयोग किया गया है। इसी तरह का प्रमाण हरियाणा के खेरी गुजर पुरास्थल से प्राप्त ताम्रनिर्मित मानवाकृति के ऊपर हडप्पा सभ्यता से प्राप्त मुहरों पर उत्कीर्ण एकश्रृंगी पशु के समरुप चित्रण है(छायाचित्र 26)। इस पर हडप्पा लिपि के अक्षर का अंकन भी मिलता है।[33] सैंधव सभ्यता का नगरीय स्वरुप प्रारम्भिक भारतीय संस्कृति पर स्थायी प्रभाव इस लिये नही डाल सका, क्योकि बाद की अनेक शताब्दियों तक भारत में नगरों का विकास नही हो सका। लेकिन अनेक परम्पराएं संशोधित एवं परिवर्तित रुप से आगे चलती रही, जो हमें वर्तमान समय में सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक जीवन के अनेक तत्वों दिखलायी देती हैं।

छायाचित्र 1 : मृण एवं हस्तिदन्त के मापक, कालीबंगा व लोथल

छायाचित्र 2 : बटखरे, अल्लाहदीनो, पाकिस्तान

छायाचित्र 3 : नर्तकी प्रतिमा, मोहनजोदड़ो

छायाचित्र 4 : नटराज, चोल कला

छायाचित्र 5 : कपाल की शल्यक्रिया, कालीबंगा, राजस्थान

छायाचित्र 6 : जुती हुयी खेत की पंक्ति, कालीबंगा

छायाचित्र 7 : आधुनिक जुती हुयी खेत पंक्ति

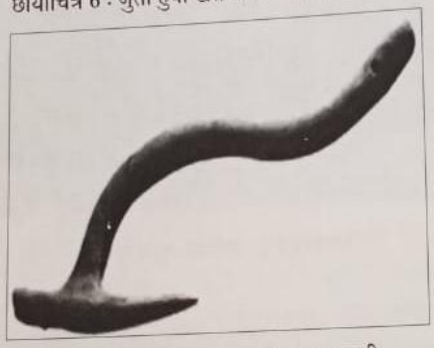

छायाचित्र 8 : मृण का बना हल, बनावली

छायाचित्र 9 : सिलबट्टा, राखीगढ़ी, हरियाणा

छायाचित्र 10 : पुरुष प्रस्तर मूर्ति, मोहनजोदड़ो

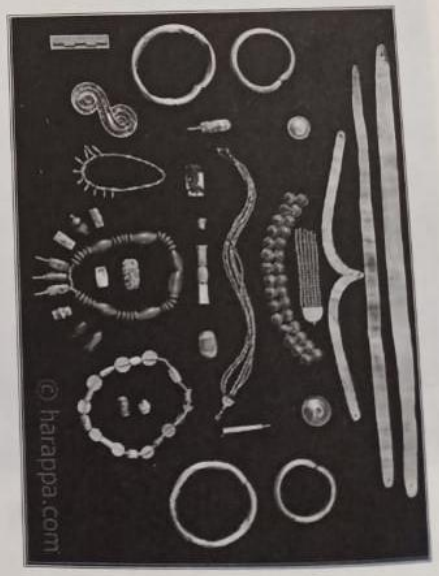

छायाचित्र 11 : आभूषण व मनके, मोहनजोदड़ो

छायाचित्र 12 : पशुपति शिव, मोहनजोदड़ो

छायाचित्र 13 : पीपल, मोहनजोदड़ो

छायाचित्र 14 : मृण पट्टिटका पर वृक्ष, हडप्पा

छायाचित्र 15 : नागपूजा, मोहनजोदड़ो

छायाचित्र 16 : पुरुष धड़, हड़प्पा

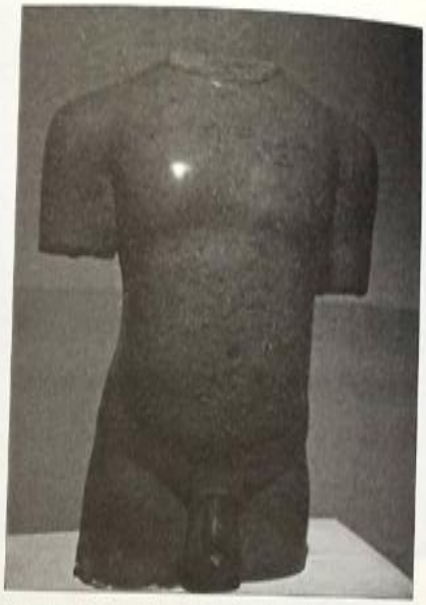

छायाचित्र 17 : पुरुष धड़, लोहानीपुर, पटना

छायाचित्र 18 : रथ व ताबूत, सनौली

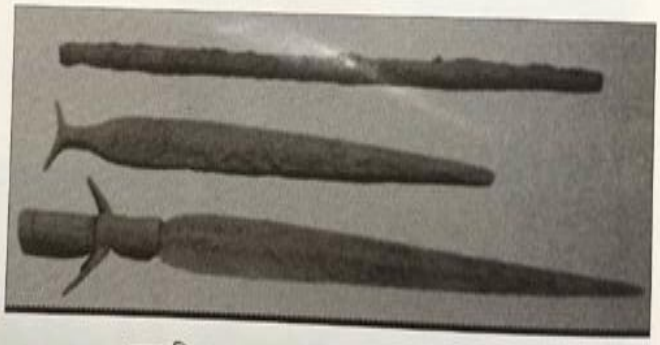

छायाचित्र 19 : तलवार एवं कटार, सनौली

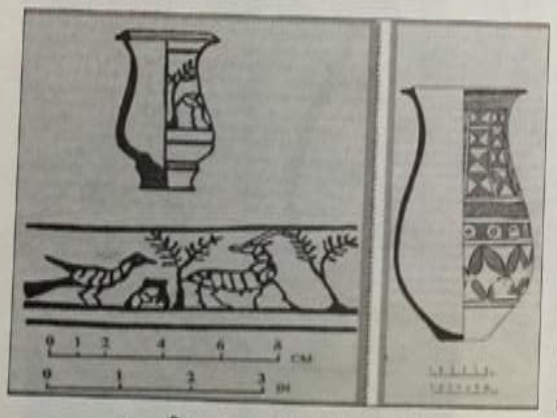

छायाचित्र 20 : लोक कथानक का अंकन, लोथल

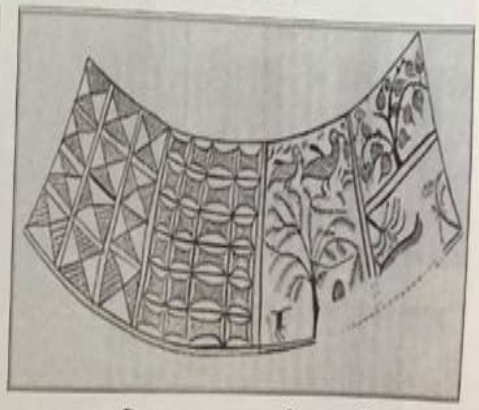

छायाचित्र 21 : जामदानी पर अंकित लोक कथानक, लोथल

छायाचित्र 22 : स्वतिक, मोहनजोदड़ो

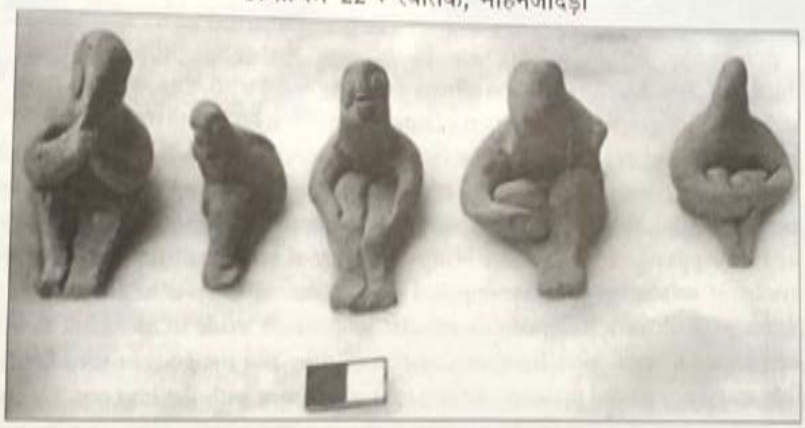

छायाचित्र 23 : योग की विभिन्न मुद्राएं, हड़प्पा

छायाचित्र 24 : नारी मृण्मूर्ति के मांग में सिन्दूर का प्रमाण, नौसारो, पाकिस्तान

छायाचित्र 25 : खिलौने, चौसर, पांसे का अंकन, मोहनजोदड़ो

छायाचित्र 26 : मानवाकृति में अंकित एकश्रृंगी पशु, खेरी गुजर, सोनीपत, हरियाणा

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003

सन्दर्भ -

1. *Possehl, Gregory L. 2003. The Indus Civilization : A Contemporary Perspective, New Delhi : Vistaar Publications, Page. 57*
2. *अग्रवाल, वासुदेवशरण, भारतीय कला, पृथवी प्रकाशन, वाराणसी, 1966, पृष्ठ 51-54*
3. *Danino, Michel 2003. The Harappan Heritage and the Aryan Problem , Man and Environment, vol. XXVIII, No. 1, Page 21-32*
4. *ऋग्वेद, संहिता और पद, सायण भाष्य सहित, वैदिक संशोधन मण्डल, पूना, 1933, 7.55.6,. 10.73.10*
5. *उपरोक्त, ऋग्वेद, 4.53.1,. 6.15.3*
6. *उपरोक्त, ऋग्वेद, 1.69.2,. 3.1.18,. 4.2.7*
7. *उपरोक्त, ऋग्वेद, 1.166.8*
8. *उपरोक्त, ऋग्वेद, 6.46.9, त्रिधातु शरणं त्रिवरुथं स्वतिमत्। यहाँ त्रिधातु का अर्थ सायण त्रिभूमिकं और स्वस्तिमत् का अर्थ अविनाशयुक्तं से करते हैं।*
9. *Rao, S.R. 1979. Lothal: A harappan Port town, 1955-62, Vol- I, No 78, MASI, New Delhi : A.S.I. Page 730.*
10. *Mackay, E.J.H. 1943. Chanhudaro Excavation 1935-36, New Heaven:American Oriental Society. Page 229*
11. *Rao, S.R. 1973. Lothal and Indus Civilization, Bombay: Asia Publishing House, Page 107*
12. *Agrawal, D.P. 1982. "The Technology of the Indus Civilization" In Indian Archaeology. New Perspective. R.K. Sharma (Etd.), New Delhi:Agam Kala Prakashan, Page 90*
13. *Deshpandeay, M.N. 1971. Archaeological Sources for the Reconstructing of the History of Science. Indian Journal of History of Science, No.VI, Page 9*

14. Agrawal, D.P. 2007. The Indus Civilization an Interdisciplinary perspective, New Delhi: Aryan Books International, Page 78
15. Sankhyan, A. R. and G. R. Schug. 2011. First evidence of Brain Surgery in Bronze age Harappa, Current Science, Vol. 100, No. 11, 10 June 2011, Page 1621-1622
16. सेन, समरेन्द्र नाथ, विज्ञान का इतिहास (भाग-1) बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1972, पृ. 81
17. Lal, B. B.1971. Perhaps the earliest ploughed field so far excavated anywhere in world, Puratattva, No. 4, Page 1-3.
18. Bisht, R. S.1978. Banawali : A new Harappan site in Haryana, Man and Environment, No. 2, Page 86-88
19. Sankalia, H.D. 1970. Some Aspects of Prehistoric Technology in India, New Delhi : INSA, Page 63
20. Allchin B, Alehin.1982. The rise of civilization in India and Pakistan, Cambridge: Cambridge University Press, Page 192
21. थपल्याल, किरण कुमार एवं संकटाप्रसाद शुक्ल, सिंधु सभ्यता, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2003 (षष्ठ संस्करण) पृ. 151
22. Marshall, John. 1931. Mohenjodaro and the Indus Civilization, Vol. III, London : Arthur Probsthain, Page 51-52
23. Lal, B. B. 2009. How deep are the Roots of Indian Civilization? Archaeological Answer, New Delhi : Aryan Books International, Page 33
24. Lal, B. B.1997. The Earliest Civilization of South Asia: rise, maturity and decline, New Delhi: Aryan Books International, pl. XXXII-B, Page 227-228
25. Manjul, S.K and A.Manjul. 2018. Recent Excavation at Sanauli, District Bagpat, UP: A landmark of Indian Archaeology. Puratattva 48, Page 220-225, Pl. 6-12
26. Allchin, 1958. 'Morhana Pahar: A Rediscovery' Man, 58, Page 153-55, Pl. M
27. Lal, B.B, 2002.The Sarasvati Flows of the Continuity of Indian Culture, Aryan Books International, New Delhi, Page 83-84
28. Vats, M. S. 1940. Excavations at Harappa, Delhi: Government of India Press, Page 452
29. Marshall, John. 1931. Mohenjodaro and Indus Civilization, Vol.III, pl. XCIV, No.6-7
30. Vats, M. S. 1940. Excavations at Harappa, Delhi: Government of India Press, Page 459
31. Lal, B.B. 2002.The Sarasvati Flows of the Continuity of Indian Culture, New Delhi: Aryan Books International, Page 84-86
32. थपल्याल, किरण कुमार एवं संकटाप्रसाद शुक्ल, सिंधु सभ्यता, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2003 (षष्ठ संस्करण) पृ. 238-43
33. झा, सुनील कुमार हडप्पा सभ्यता की निरन्तरता, रिसर्च इण्डिया प्रेस, नई दिल्ली, 2013, पृ. 241, छायाचित्र 48